दिल्ली पब्लिक स्कूल, जम्मू

सत्र 2018–19

अद्र्ध वार्षिक परीक्षा अभ्यास कार्य पत्र–I

कक्षा– छठी

विषय – हिंदी

पूर्णांक–

प्र01 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:**

संसार में सबसे अमूल्य वस्तु 'समय' है क्योंकि दुनिया की अधिकांश वस्तुओं को घटाया–बढ़ाया जा सकता है, पर समय का एक क्षण भी बढ़ा पाना व्यक्ति के बस में नहीं हैं। समय के बीत जाने पर व्यक्ति के पास पछतावे के अलावा कुछ नहीं होता। विद्यार्थी के लिए तो समय का और भी अधिक महत्तव है। विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य है– शिक्षा प्राप्त करना। समय के उपयोग से ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। जो विद्यार्थी अपना बहुमूल्य समय खेल–कूद, मौज –मस्ती तथा आलस्य में खो देते हैं, वे जीवन भर पछताते रहते हैं क्यांकि वे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रह जाते हैं और जीवन में उन्नति नहीं कर पाते। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि जो क्षण बीत गए हैं, उसकी चिंता करने के बजाय जो अब हमारे सामने हैं, उसका सदुपयोग करें।

क. समय को सबसे अमूल्य वस्तु क्यों कहा गया है ?

उ0 .....

ख. विद्यार्थी जीवन का क्या उद्देश्य है ?

उ0 .....

ग. किस प्रकार के विद्यार्थी जीवन भर पछताते रह जाते हैं ?

उ0 .....

घ. समय के संबध में व्यक्ति का क्या कर्त्तव्य बताया गया है ?

उ0 .....

ड. गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए ?

उ0 .....

प्र02 **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:**

स्वामी विवेकानन्द जी का जन्म सन् 1863 ई0 में हुआ । बचपन में उनका नाम नरेन्द्र नाथ था। वे प्रारंभ से ही कुशाग्रबुद्धि थे। उन्होंने अंग्रेजी स्कूलों में शिक्षा पाई और सन् 1884 ई0 में बी0ए0 की डिग्री प्राप्त की । कुछ दिनों तक वे ब्रह्म समाज के शिष्य बनकर रहे । वे नित्य प्रार्थना में शामिल होते थे । वे बहुत ही मधुर आवाज़ में कीर्तन किया करते थे। ब्रह्म समाज के उपदेशों से जब उनका मन शांत न हुआ तो वे सत्य की खोज मे इधर–उधर भटकने लगे । उन दिनों स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रति लोगों की श्रद्धा थी। नरेंद्र नाथ ने भी उनके सत्संग से लाभ उठाना प्रारंभ किया और धीरे–धीरे उनके उपदेशों से प्रभावित होकर उनकी भक्त मंडली में शामिल हो गए । उनकी गुरुभक्ति इस सीमा तक पहुँच गई कि कभी वे परमहंस जी की चर्चा करते तो एक–एक शब्द से श्रद्धा और सम्मान टपकता ।

क. स्वामी विवेकानंद जी का जन्म कब हुआ व उनके बचपन का नाम क्या था?

उ0 .....

ख. स्वामी विवेकानंद जी के बचपन के बारे में बताइए ।

उ0 .....

ग. सत्य की खोज में विवेकानंद कहाँ–कहाँ भटके ?

उ0 .....

घ. विवेकानंद को किनके उपदेशों को सुनकर शांति का अनुभव हुआ ?

उ0 .....

ड. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए ।

उ0 .....

प्र03 **निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –**

है शौक यही अरमान यही, हम कुछ करके दिखलाएँगे ।
मरने वाली दुनिया में हम, अमरों के नाम लिखाएँगे ।
जो लोग गरीब भिखारी हैं, जिन पर न किसी की छाया है ।
हम उनको गले लगाएँगे, हम उनको सुखी बनाएँगे ।
जो लोग हार कर बैठे हैं, उम्मीद मार कर बैठे हैं।
हम उनके बुझे दिमागों में फिर से उत्साह जगाएँगे ।
हम उन वीरों के बच्चे हैं, जो धुन के पक्के सच्चे थे।
हम उनका मान बढ़ाएँगे, हम जग में नाम कमाएँगे ।

क. बच्चों का क्या शौक तथा अरमान है ?

उ0 .....

ख. बच्चे किन्हें सुखी बनाना चाहते हैं ?

उ0 .....

ग. बच्चे किनमें उत्साह जगाने की बात कर रहे हैं ?

उ0 .....

घ. बच्चे किनका मान बढ़ाना चाहते है ?

उ0 .....

ड. पद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

उ0 .....

प्र.4 **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।**

समय बहुत ही मूल्यवान है, व्यर्थ कभी मत खोना,
चला गया जो समय लौटकर, कभी नहीं फिर आता।
धन खो जाता, श्रम करने से फिर मनुष्य है पाता
विद्या खो जाती, फिर भी पढ़ने से है आ जाती
लेकिन खो जाने से मिलती नहीं समय की पाती ।।

क. कवि किसको व्यर्थ खोने के लिए मना कर रहा है ?

उ0 .....

ख. लौटकर वापिस क्या नहीं आता ?

उ0 .....

ग. श्रम करने से मनुष्य फिर से क्या पाता है ?

उ0 .....

घ. पढ़ने से मनुष्य दोबारा क्या पा लेता है ?

उ0 .....

ड. काव्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए ?

उ0 .....